भारतीय चित्रकला की विशेषताएँ —

यह सर्वविदित है कि भारतीय चित्रकला एवं अन्य कलाएँ दूसरे देशों की कलाओं से भिन्न है और भारतीय कलाओं की कुछ ऐसी महत्वपूर्ण विशेषताएँ है, जो अन्य देशों की कला से इसे पृथक कर देती है। ये विशेषताएँ निम्नलिखित है —

(1) धार्मिकता एवं आध्यात्मिकता — विश्व की सभी कलाओं का जन्म धर्म के साथ ही हुआ है। कला के उद्भव में धर्म का बहुत बड़ा हाथ है। धर्म ने ही कला के माध्यम से अपनी धार्मिक मान्यताओं को जन-जन तक पहुँचाया है।

(2) अन्तः प्रकृति से अंकन — अजन्ता की चित्रों में जंगल, उद्यान, पर्वत, प्रकृति, सरोवर, राजमहल तथा कथा के पात्र सभी को एक साथ, एक ही दृश्य में अंकित किया गया है।

(3) कल्पना — कल्पनात्मकता भारतीय चित्रकला की प्रमुख विशेषता है। यूं भी भारतीय लोगों का मन यथार्थ की अपेक्षा कल्पना में अधिक रमा है।

(4) प्रतीकात्मकता — भारतीय कला की एक विशेषता उसकी प्रतीकात्मकता में निहित है। प्रतीक कला की भाषा होती है। जैसे — नाग एवं जटाजूट में से निकलती जलधारा 'शिव' का प्रतीक है। मोरपंख एवं मुरली 'कृष्ण' का प्रतीक है। दशदिक् दिशाओं की, चार लोकों की सृष्टिकर्ता 'चतुर्मुख ब्रह्मा' का प्रतीक है।

(5) आदर्शोन्मुखता — भारतीय चित्रकार यथार्थ की अपेक्षा आदर्श में ही विचरण करता है। वह संसार में जैसा देखता है, वैसा चित्रण न करके, जैसा होना चाहिए वैसा चित्रण करता है।

(6) रेखा तथा रंग - भारतीय चित्रकला रेखा - प्रधान है उसमें गति है। रेखाओं द्वारा बाह्य सौन्दर्य के साथ-साथ गम्भीर भाव भी कलाकार ने चित्रों में बड़ी कुशलता से दर्शाये है। रेखा द्वारा गोलाई, स्थितिजन्यलघुता, परिप्रेक्ष्य इत्यादि सभी कुछ प्रदर्शित हैं। यूँ तो आकृतियों में सपाट रंग का प्रयोग किया है, किन्तु वे सांकेतिक आधार पर है, साथ ही आलंकारिक या कलात्मक योजना पर आधारित हैं।

(7) अलंकारिकता - भारतीय कला में अलंकरण का अत्यधिक महत्व है, क्योंकि भारतीय कलाकार ने सत्यं, शिवम् के साथ सुन्दर की कल्पना की है और इसीलिये - सुन्दर तथा आदर्श रूप के लिये वह अलंकरणों की अपनी रचना में प्रयोग करता है।